आधुनिक हिन्दी कविता में राष्ट्रीय चेतना

संपादक
डॉ. माधुरी पाण्डेय गर्ग

आधुनिक हिन्दी कविता में राष्ट्रीय चेतना

संपादक

डॉ. माधुरी पाण्डेय गर्ग

विभागाध्यक्ष, हिन्दी

शासकीय तिलक स्नातकोत्तर महाविद्यालय

कटनी (म.प्र.)

नमन प्रकाशन

नई दिल्ली - 110002

© संपादक

पहला संस्करण : 2022

ISBN : 978-93-90868-03-2

नमन प्रकाशन
4231/1, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002
फोन: 8750551515, 8595352540

श्री नितिन गर्ग द्वारा नमन प्रकाशन के लिए प्रकाशित तथा
एशियन ऑफसेट प्रिंटर्स, मौजपुर, शाहदरा, दिल्ली में मुद्रित।

Adhunik Hindi Kavita Mein Rashtriya Chetna
By Ed. Madhuri Garg

समर्पण

पूज्य माँ एवं पिताजी को
जिनकी स्मृति मात्र शेष है
जो कर्म पथ पर प्रशस्त करती है।

21. राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक कामायनी 156
दीपक कुमार ललखेर

22. सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक दिनकर के काव्य 161
डॉ. विनय कुमार शुक्ल

23. मैथिलीशरण गुप्त की राष्ट्रीय चेतना 168
डॉ. वर्षा खरे

24. माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना 174
डॉ. ममता उपाध्याय

25. छायावादी कविता में राष्ट्रीय चेतना 180
डॉ. वन्दना त्रिपाठी

26. "जयशंकरप्रसाद के काव्य में राष्ट्रीय चेतना" 187
डॉ. दीपक विनायक पवार

27. छायावाद युगीन काव्य में राष्ट्रीय चेतना 193
डॉ. शेख शहेनाज अहेमद

28. 'कुँअर सिंह' : तेगा पर पानी कहाँ थोर 202
डॉ. अजय बिहारी पाठक

29. छायावादी कवियों की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना का स्वरूप 210
डॉ. जगदम्बा प्रसाद दुबे

30. द्विवेदीयुगीन हिन्दी-काव्य में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति 221
डॉ. इन्दुमती दुबे

31. हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में प्रयोगवादी राष्ट्रीय चेतना 232
डॉ. सबीहा ताबीर

32. राष्ट्रीय चेतना के स्वर : आधुनिक काल 234
अतुल कुमार

33. राष्ट्रीय चेतना का दस्तावेज : भारत-भारती 240
डॉ. उषा तिवारी

27.
छायावाद युगीन काव्य में राष्ट्रीय चेतना

डॉ.शेख शहेनाज अहेमद
सहयोगी प्राध्यापक
हु.जयवंतराव पाटील महाविद्यालय
हिमायतनगर नांदेड (महाराष्ट्र)
मो.9404639785

हिंदी साहित्य में हिंदी गद्य साहित्य का प्रवेश द्पार भारतेंदु युग को कहा जाता है। क्योंकि इस युग में भारतेंदु ने हिंदी साहित्य को गद्य रूप में लिखना प्रारंभ किया। यह युग अँग्रेज शासन का चरमोत्कर्ष युग रहा है। इसी युग में राष्ट्रभक्ति की भावना को जागृत करने का कार्य भारतेंदु ने किया। उन्होंने 'भारत-दूर्दशा' नाटक लिखकर लोगों में राष्ट्रीय चेतना का अलख जगाया। तत्कालीन अँग्रेज शासन व्यवस्था के प्रति असंतोष की भावना भारतेंदु साहित्य में आने लगी थी। उसी की डोर पकड़ कर द्विवेदी युग भी चलता रहा। द्विवेदी युग में मातृभूमि के प्रति प्रेम की भावना मुखरित होकर काव्य में समाविष्ट होने लगी थी। द्विवेदी युग में भी राष्ट्रप्रेम की यह भावना मुग्य रूप से प्रबंध काव्यों के माध्यम से अभिव्यक्त हुई है।

स्वतंत्रता आंदोलन में जो गाँधी युग है वही साहित्य में छायावादी युग है। राष्ट्रीय चेतना काजी अलख भारतेंदु द्वार जगाया गया वह छायावाद युग में प्रखरता से दिखाई देता है। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि छायावादी काव्य गाँधी युग की मिट्टी में हो अंकुरित होकर पुष्पित और पल्लवित हुआ। यह युग राष्ट्रीय चेतना का उत्कर्ष का युग था। उस समय हर भारतीय जनमानस में राष्ट्र-प्रेम का भाव समुद्र की लहरों की तरह हिलोरे मार रहा था। अतः छायावादी काव्य से यह आशा करना स्वाभाविक ही था कि वह अपने युग का प्रतिनिधित्व करते हुए राष्ट्रीय चेतना की

पूर्ण अभिव्यक्ति करें लेकिन छायावादी काव्य के संबंध में यह आम धारणा है उसने अपने युग का प्रतिनिधित्व करने की बजाय उसकी उपेक्षा की है। इतना ही नही यह भी कहा जाता है कि देश की जनता जहां अँगे्जों के अत्याचार और पीड़ा को झेल रही थी, तब छायावादी काव्य स्वप्न लोक में जी रहा था। इस वास्तविकता से उसने मुँह मोड़ लिया था। कुछ लोगों के लिए छायावाद युग का काव्य पलायन वादी था।

परंतु छायावाद को पलायनवादी कहना उचित नही होगा। यह जो लोग छायावाद को रहस्यवाद अथवा प्रतीकवाद का पर्याय मात्र समझते है अथवा जो इसे अँगे्जी के रोमेंटिक कवियों का अनुकरण मानकर स्वच्छंतावाद की संज्ञा देते है वे ही लोग छायावाद को पलायनवादी घोषित करते है। इसमें संदेह नहीं कि छायावाद में रहस्यवाद, अध्यात्मिकता, प्रतीकवाद, ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, प्रतीकात्मता तथा स्वच्छंदतावाद की आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति, कल्पना की अभिव्यक्ति, सौंदर्य की ललक, प्रेम की उन्मुक्तता, विस्मय की भावना, रुढ़ियों और बंधनों का विद्रोह समावेश है किंतु उसमें भारत के सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय नवजागरण के विविध पक्षों - विवेकानंद रामतीर्थ जैसे योगियों की अद्वैतमूलक भक्ति भावना, रवीन्द्र नाथ ठाकुर का बंधुत्ववाद, महात्मा गांधी का मानवतावाद, राष्ट्रीयता की भावना, और विदेशी शासन का विद्रोह भी समाविष्ट है। वस्तुतः छायावाद की मुख्य भावधारा मानवीय, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक है। नंददुलारे वाजपेयी के शब्दों में ''छायावादी'' काव्यधारा का भी एक अध्यात्मिक पक्ष है किंतु उसकी मुख्य प्रेरणा धार्मिक न होकर मानवीय और सांस्कृतिक है। उसे हम बीसवी शताब्दी की मानवीय प्रगति की प्रतिक्रिया भी कह सकते है।''[1]

छायावाद की मूल प्रवृत्ति रचनात्मकता है। जो भारतीय संस्कृति की जीवन परम्परा, राष्ट्रीयता की सशक्त आकांक्षा लिए हुए नवीन मानवतावाद के आदर्श की प्रेरणा से ओतप्रोत है। छायावाद, रहस्यवाद अध्यात्म, स्वच्छंदता, मानवता, राष्ट्रीयता और सूक्ष्म सौंदर्य बोध आदि विविध प्रवृत्तियों का समग' रूप है। अर्थात वह जागरण युग की प्रबुद्ध आत्मा की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है।

छायावाद का युग उथल-पुथल का युग था राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आदि सभी स्तरों पर विभ्रम, द्वंद्व, संघर्ष, और आंदोलन इस युग की विशेषता थी। यहां हमे छायावादी युग की सामाजिक-राजनीतिक पृष्ठभूमि की विशद व्याख्या करना नही है। किंतु, यहाँ हमे इस बात को ध्यान में रखकर अवश्य आगे बढ़ना है कि कवि अपने समय की वास्तविकता, यथार्थ से प्रभावित होकर अपनी रचनाओं में उसकी विशिष्ट प्रवृत्तियों को अभिव्यक्ति देता है उसकी रचना उस युग-विशेष की

मूल प्रवृत्ति को रूपायित करती है।

इस नवीन दृष्टिकोण के प्रकाश में छायावादी काव्य का राष्ट्रीय चेतना के साथ संबंध सहज जुड जाता है। किंतु छायावादी काव्य में राष्ट्रीय चेतना के साथ संबंध सहज जुड़ जाता है। किंतु छायावादी काव्य में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति को प्रमाणित करने और उनके स्वरूप का निर्धारण करने के पूर्व हमें उन कवियों के संबंध में भी हमारी धारणा स्पष्ट होनी चाहिए जिन्होंने छायावादी काव्यधारा के उद्भव और विकास में योगदान दिया है। छायावादी काव्य की रचना का श्रेय या मूल इस पंत, प्रसाद निराला और महादेवी वर्मा इन चार कवियों को मानते हैं। परंतु वैसे देखा जाए तो किसी भी नवीन काव्य धारा का अविर्भाव और अवसान अचानक से निर्मित नहीं होता। उसके मूल में अनेक कवियों का क्रमशः योगदान होता है। छायावादी काव्य अविर्भाव और अवसान को गढ़नेवाले अनेक महत्वपूर्ण कवि हुए है। इस बात को स्वीकार करते हुए छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत जी कहते है कि, ''छायावादी काव्य के कवि चतुष्टय तक सीमित कर देना मुझे विचार की दृष्टि से संगत नही प्रतीत होता। अभिव्यंजना शैली, भाव-संपदा, सौंदर्य बोध तथा काव्य-वस्तु आदि की दृष्टि से उस युग के आगे-पीछे अन्य भी अनेक समृद्ध कवि हुए हैं, जो छायावाद के उद्भव और विकास में सहाय्यक हुए हैं। उनमें से माखनलाल जी, मुकुटधर पांडे, सियारामशरण जी, उदयशंकर भट, डॉ.रामकुमार वर्मा, नवीन जी रामनरेश त्रिपाठी, इलाचंद जोशी आदि अनेक लब्ध प्रतिष्ठ कवियों के नाम गिनाये जा सकते है।''[2]

यह एक निर्विवाद तथ्य है कि पंत जी द्वारा गिनाये गये कवियों ने छायावादी काव्यधारा के उद्भव और विकास में किसी न किसी रूप मे अपना योगदान है। अतः इन सभी का छायावादी कवि के रूप में मानकर छायावादी काव्य में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति की खोज करना उचित होगा। काव्य में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति की तीन मुग्य भावभूमियाँ है—1. भारत के स्वर्णिम प्रतित का गौरव गान, 2. भारत की वर्तमान दयनीय दशा का चित्रांकन और 3. भारत के उज्ज्वल भविष्य का रूपांकन। इन तीन भावभूमियों को एक सुत्र में बांधने का काम इस युग के कवियों ने किया है। किसी भी देश का स्वर्णिम अतीत देशवासियों के लिए प्रेरणा दायी होता है। शताब्दियों से गुलामी की जंजीर में जकड़े हुए देशवासियों में व्याप्तहीनता की भावना को दूर कर उसमें आत्मगौरव और आत्मविश्वास का संचार करने के लिए भारत के स्वर्णिम इतिहास का गौरवगान आवश्यक था। इसे पूर्ण रूप के लिए मातृभूमि वंदना, राष्ट्र-प्रेम एवं जागरणा-संदेश के गीतों को भी जोड़ा गया है। छायावादी कवि निराला अपनी कविता 'खंडहर के प्रति' नामक कविता में भारत के

महामानवों को स्मरण कर कहते है–

"आर्त भारत! जनक हूँ मैं
जैमिनि, पंतजलि व्यास ऋषियों का,
मेरी ही गोद पर शैशव विनोद कर
तेरा ही बढ़ाया मान
राम - कृष्ण भीमार्जुन भीष्म न्नर देवो ने।

निराला के समान बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने अपनी कविता 'उर्मिला' में भारत के अतित का गौरवगान किया है–

"पर चलाने के पूर्व यहां से कर ले तू वंदन
अभिराम -
इस सरयू सरिता का जिसकी बालू में खेले है राम।
रघु ने तपस्या करके आर्य धर्म पाला जी भर के
जहां दिलीप सुधन्वा विचरे राजदंड शुभ कर में घर के।"

रामकुमार वर्मा ने भी अपनी कविता 'चितौड़ की पिता' में राजपूतों के स्वदेश प्रेम, उनका बलिदान तथा शौर्य को इस प्रकार व्यक्त किया है–

"कभी थे राजपूत अति न्यून किन्तु था
प्रिय स्वदेश अभिमान,
नारियों ने भी क्ती असि तान चढाए रण
में आत्म-प्रसून।"

इससे यह स्पष्ट होता है कि छायावादी युग में लेखनी पर नियंत्रण था। फिर भी छायावादी कवियों ने जागरण और उद्‌बोधन के गीत गाये। 'जागो फिर एक वार' निराला का प्रथम जागरण गीत है। वे कहते है–

"योग्य जन जीता है, पश्चिम की उक्ति नही
गीता है– गीता है, स्मरण करो बार - बार
जागो फिर एक बार।"

छायावादी कविता में सबसे ऊँचा सुर, स्वर महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का था। जयशंकर प्रसाद ने अपने नाटकों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को झंकृत किया तो निराला ने 'बस एक बार तू नाच श्यामा' का आह्‌वान किया। गौरवशाली

परंपरा का उन्हें जितना ज्ञान और आह्‌वान वोध था उतना अन्य किसी कवि की रचनाओं में व्यक्त नही हुआ। श्यामा का आह्‌वान करते हुए उन्होने कहा है–

"कितने ही है असुर चाहिए। कितने तुमको हारा।"
लोगों को जागृत करते हुए कहते है–
"सिंह की गोदी से
छीनता रे शिशु कौन?
मौन भी वह रहती क्या
रहते प्राण रे अजान।

छायावादी कवियों के राष्ट्रीय प्रितों में राष्ट्रप्रेम और मातृभूमि वंदना की सीधी और सहज अभिव्यक्ति हुई है। प्रसाद जी ने हिमाद्री तुंग श्रृंग से में कहा है–

हिमाद्री तुंग शृंग से प्रवुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती
'अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ-प्रतिज्ञा सोंचलो
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो।"

जयशंकर प्रसाद की कविता 'हिमायल की आँगन' में भी कवि ने फिरसे पुकारा है–

"हिमालय के आँगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार
उषा ने है अभिनंदन किया और पहनाया हीरक - हार
व्योम-तम-पुज्ज हुआ तब नष्ट, अखिल संस्कृति हो
उठी अशोक।"

इस प्रकार हम यह प्रमाण स्वरूप कह सकते हैं कि छायावादी कवियों ने राष्ट्रीय चेतना जगाने के लिए मातृभूमि की वंदना की है। प्रसाद जी ने मातृभूमि की वंदना का सुंदर गान गाया है–

"अरूण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अंन्जान क्षितिज को मिलता एक सहारा।
उसी प्रकार निराला मातृभूमि को देवी मानकर उसे
प्रतिष्ठित करते हुए कहते है–
"भारति जय विजय करे,

कनक शस्य कमल धरे
लंका पदतल शतदल
गर्जितोर्मि सागर जल
धोता शुचि चरण धवल
स्तव कर बहु अर्थ भरे।

छायावादी कवियों ने प्रकृति चित्रण, भारत के अतीत का गौरव गान करते हुए, भारत की वर्तमान दुर्दशा का चित्रांकन करते हुए, राष्ट्रीय चेतना को अभिव्यक्त किया है। इसमें कवियों ने इस विडंबना को व्यक्त किया कि, जिस भारत का अतीत इतना गौरवशाली और समृद्ध था उसका वर्तमान कितना दुःखदायी है। इनकी कविताओं मे पराधीनता अज्ञानता, गरीबी, अस्पृश्यता, ऊँच-नीच की भावना, अंधविश्वास और उससे उत्पन्न होनेवाले क्लेशों का चित्रांकन किया है। माखनलाल चतुर्वेदी अपनी कविता 'कैदी और कोकिला' नायक कविता में परधीनता का वर्णन इस प्रकार करते है–

"तुझे मिली हरियाली डाली,
मुझे नसीब कोठरी काली।
तेरा नभ पर संचार,
मेरा दस फुट का संसार।

इस कविता में कवि यह संदेश देता है कि पशु-पक्षी भी पराधीनता में जीवन जीनेवाले भारतीयों से श्रेष्ठ है। निराला ने भी अपनी कविता दिल्ली में भारत की परतंत्रता की ओर इशारा करते हुए कहते है–

"खींचता ही रहा जहाँ पृथ्वी के देशों को
स्वर्ण प्रतिमा की ओर
उठ जहाँ शब्द घोर
संसृति के शक्तिमान दस्युओं का अदमनीय
पुनः पुनः बर्बरता विजय पाती गई
सभ्यता पर संस्कृति पर।

वर्तमान समय में भारत की दशा इस प्रकार थी कि गोरे लोगों द्वारा काले भारतीयों को अस्पृश्य समझा जाता था। गरीबी ने तो देश के लोगों को झकझोर कर रख दिया था। इसीलिए निराला ने अपनी कविता 'भिक्षुक' में गरीबी का चित्रांकन कतरे हुए कहा है–

"वह आता -
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ
पर आता।
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुठ्ठी भर दाने को,
मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता।

भारत की इस दयनीय दशा का चित्रण का चित्र खींचने के पीछे छायावादी कवियों का यह लक्ष्य रहा की। इस दयनीय दशा में पड़े भारतवासियों के प्रति दया-सहानुभूति जगाना और इस दशा के लिए उत्तरदायी विदेशी शासकों के विरुद्ध घृणा और क्रोध जगाना ताकि स्वतंत्रता संग्राम को गीत मिल सके।

इतना ही नही इन छायावादी कवियों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए क्रांति का आह्वान किया उनमें बलिदान की भावना जगाने का प्रयास किया। अपने काव्य में वे नवयुवकों की बलिदान के लिए प्रेरित करते हुए कहते हैं–

है बलिवेदी सखे प्रज्ज्वलित माँग रही
इंधन क्षण, क्षण,
आओ युवको लगा दो तुम अपने
यौवन का ईंधन।
भस्मसात हो जाने दो ये प्रबल उमंगे
जीवन की।
अरे सुलगने दो बलिवेदी चढने दो बलि
यौवन की।"

माखनलाल चतुर्वेदी ने युवाओं के बलिदान का आह्वान किया है। वे अपनी कविता 'पुष्प की अभिलाषा' नामक कविता में करते है–

"चाह नही मै सूरबाला के गहनों में गूँधा जाऊ
चाह नही प्रेमी माला में बिध प्यारी को ललचाऊँ
चाह नही सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ
चाह नही देवी के सिर पर चढूँ भाग्य पर इठलाऊँ
मुझे तोड लेना वनमाली। उस पथ में तुम देना फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ पर जावे वीर अनेक।

छायावाद युग में सुभद्रा कुमारी चौहान भी एक प्रसिद्ध कवयित्री रही है। सुभद्रा जी राष्ट्रीय चेतना की सजग कवयित्री रही, उन्हें स्वाधीनता संग्राम में अनेक यातनाएँ झेलनी पड़ी। एक कविता में उन्होंने वर्णन किया है–

"चमक उठी सन सत्तावन में,
वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुंह,
हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी,
वह तो झाँसी वाली रानी थी।"

इस प्रकार छायावादी कवियों ने राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति करते हुए भारत के स्वर्णिम भविष्य की कल्पना अपने काव्य में की है। इस काव्य में गाँधी जी की मानवतावादी दृष्टि और रविंद्रनाथ की विश्व बंधुत्व की भावना का समावेश है। निराली जी अपने काव्य में यह कामना करते है कि भविष्य में भारत पराधीनता से मुक्त होगा दासता से कट जाएँगा–

"अयोगी भाल पर भारत की गई ज्योति,
हिंदुस्तान मुक्त होगा घोर अपमान से
दासता के पाश कट जावेंगे।"

उसी प्रकार सुमित्रानंदन पंत अपनी कविता 'युगवाणीं' में आदर्श भारतीय समाज की कल्पना करते हुए कहते है–

रूढ़ि रीतियाँ जहाँ न हों आधारित,
श्रेणी वर्ग में मानव नही विभाजित,
धन-बल से हो जहां न जन-श्रम-शोषण,
पुरिति भाव-जीवन के निखिल प्रयोजन।"

पंत में अपने इस कविता में वसुधैव कुटुंबकम का आदर्श व्यक्त किंया है। जो इस प्रकार है–

"क्यों न एक हो मानव-मानव सभी
परस्पर,
मानवता निर्माण करें जग में लोकोत्तर।

छायावादी कवि दिनकर भी 'आशा का दीपक' नामक कविता में भारत के भविष्य की कामना करते हैं जो आशादायी है–

"दिशा दीप्त हो उठी प्राप्त कर पुण्य-प्रकाश तुम्हारा।
लिखा जा चुका अनल-अक्षरों में इतिहास तुम्हारा।
जिस मिट्टी ने लहु पिया, वह फूल खिलाएगी ही,
अम्बर पर घन बन छाएगा ही उच्छवास तुम्हारा।
और अधिक ले जाँच, देवता इतना कसूर नही।"

कवि यह आशा करता है कि जिस भारत भूमि की स्वतंत्रता के लिए इतने बलिदान हुए, उसमें का स्वतंत्रता का फूल खिलकर ही रहेगा। यह आशा अवश्य फलवती होगी। हमारी पीड़ाजन्य साँसे आकाश में बादल बनकर अवश्य छायेंगी जिससे स्वतंत्रता के रूप में सूखों की वर्षा होगी।

इस प्रकार स्पष्ट है कि छायावादी काव्य में राष्ट्रीय चेतना की समुचित अभिव्यक्ति हुई है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिंदी साहित्य का इतिहास–आ.रामचंद्र शुक्ल
2. हिंदी साहित्य का इतिहास–डॉ.नगेंद्र
3. नये युग का प्रतिनिधि काव्य–नंद दुलारे वाजपेयी
4. छायावाद की प्रासंगिकता–पृ.13
5. प्रसाद–निराला–अज्ञेय–समस्वरूप चतुर्वेदी
6. आधुनिक हिंदी समीक्षा–निर्मल जैन प्रेमशंकर
7. राष्ट्रकवि दिनकर एवं उनकी काव्य कला–शिखर चंद्र जैन
8. सत्यदेव चौधरी–भारतीय शैली विज्ञान
9. हिंदी की साहित्य काव्यधारा एक समग' अनुशीलन–देवराज शर्मा पथिक
10. राष्ट्रीयता की आवश्यकता–माखनलाल चतुर्वेदी
11. छायावादी काव्य में राष्ट्रीय–सांस्कृतिक चेतना